ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-1* Issue-3* April- 2016
Innovation The Research Concept

हिंदी उपन्यास और विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक प्रवृत्तियां (मुंशी प्रेमचंद के विशेष सन्दर्भ में)

सुमन वर्मा
व्याख्याता,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर
राजस्थान, भारत

Abstract

हिंदी साहित्य में उपन्यास लेखन के प्रमुख तीन काल हैं जिन में हिंदी उपन्यास लिखे गए और जिन्होंने वर्तमान में भी उपन्यास लेखन हेतु आज के उपन्यासकारों को लेखन कार्य हेतु प्रेरित किया है- भारतेन्दु युग (1882 से 1916 तक), प्रेमचंद युग (1916 से 1940 तक), आधुनिक युग (1940 से आजतक)। भारतेन्दु युग से निरंतर प्रगतिशील उपन्यास विधा समकालीन हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण गद्य विधा के रूप में क्रियाशील है। आरंभिक हिन्दी उपन्यासों के अंतर्गत प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं- सन् 1877 में श्रद्धाराम फुल्लौरी द्वारा विषयवस्तु की नवीनता के आधार लिखित एवं आचार्य राम चंद्र शुक्ल द्वारा प्रशंशित सामाजिक उपन्यास 'भाग्यवती', 1882 में प्रकाशित लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा गुरु' आदि।

उसके बाद प्रत्येक हिंदी साहित्य युग में उपन्यास लेखन निरंतर फला-फूला जिसके अंतर्गत अनेकों प्रकार के उपन्यास लिखे गए जो आज भी न केवल मनोरंजन और पाठ्यक्रम के अंग के रूप में पढ़े जाते हैं, वल्कि भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर के रूप में विभिन्न भारतीय और विदेशी महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की पुस्तकालयों में सुरक्षित रहकर शोधार्थियों द्वारा सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में शोध अध्ययनों हेतु प्रयोग किये जा रहे हैं।

वर्तमान शोध अध्ययन के अंतर्गत लेखिका द्वारा हिंदी साहित्य की प्रमुख विधा उपन्यास के लेखन का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत कर उपन्यास की सतत लोकप्रियता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्दः साहित्य, गद्य उपन्यास, काल, प्रगतिशील, विधा, समकालीन, विषयवस्तु, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रवृत्तियां ।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में हिंदी उपन्यास का काल भारतेन्दु युग से हुआ क्योंकि इसी युग में लाला श्रीनिवासदास ने हिंदी का प्रथम उपन्यास 'परीक्षा गुरु' लिखा था। भारतेन्दु काल के मौलिक कथा-ग्रन्थों और उपन्यासों में महत्वपूर्ण हैं : ठाकुर जगमोहन सिंह का 'श्याम स्वप्न', पं. बालकृष्ण भट्ट रचित 'नूतन ब्रह्मचारी' तथा 'सौ अजान और एक सुजान' किशोरी लाल गोस्वामी का 'स्वर्गीय कुसुम', राधाचरण गोस्वामी का 'विधवा-विपत्ति', राधाकृष्ण दास का 'निस्सहाय हिन्दू आदि। पश्चिमी साहित्य से प्रभावित भारतेन्दु-युग में लिखित उपन्यासों को वास्तविक उपन्यास नहीं कहा जा सकता। हिन्दी में वास्तविक उपन्यास लेखन सर्वप्रथम प्रेमचन्द ने किया।

भारतेन्दु युग के पश्चात् द्विवेदी युग में भी अनेकों उपन्यास लिखे गए और उनमें तिलस्म, ऐयारी, जासूसी और रोमांस के कथानक प्रस्तुत किए गए। द्विवेदी युग के उपन्यास घटना-प्रधान थे। देवकीनन्दन खत्री, किशोरीलाल गोस्वामी और गोपालराम गहमरी इस युग के प्रमुख उपन्यासकार थे। देवकीनन्दन खत्री के 'चन्द्रकांता', 'चन्द्रकांता-संतति' तथा 'भूतनाथ'; किशोरीलाल गोस्वामी के 65 ऐतिहासिक और श्रृंगारिक उपन्यास जैसे- 'कुसुमकुमारी', 'हृदयहारिणी', 'लबंगलता', 'रजिया बेगम', 'तारा', 'कनक कुसुम', 'मल्लिका देवी', 'राजकुमारी', लखनऊ की कब्र', 'चपला', 'प्रेममयी'; और गोपालराम गहमरी के साठ जासूसी उपन्यास जैसे- 'जासूस की भूल', 'घर का भेदी', 'अद्भुत खून',

'भोजपुर की ठगी', आदि उपन्यास द्विवेदी युग में लिखे गए। द्विवेदी युग के अन्य उपन्यासकारों में हैं- हरिऔध, लज्जाराम मेहता और ब्रजनन्दन सहाय।

यह सच है कि प्रेमचंद से पूर्व अनेकों उपन्यास लिखे जा चुके थे, परंतु वे सब आत्मा-विहीन प्रतीत होते थे क्योंकि उनमें अनेकों त्रुटियां थीं। प्रेमचन्द के समय से विशेष कर उनके 'सेवासदन' (सन् 1918 ई.) से हिन्दी उपन्यास में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। प्रेमचंद ने उपन्यास में न केवल मानव मन का स्वाभाविक एवं सजीव अंकन आरम्भ किया, वल्कि पहली बार हिन्दी उपन्यास में घटना और चरित्र का संतुलन स्थापित कर मनोविज्ञान का उचित समावेश किया, समाज की समस्याओं को सर्वप्रथम कथा-साहित्य में स्थापित किया, जीवन और जगत के विविध क्षेत्रों का, समाज के विभिन्न वर्गों का ग्रामीण तथा नागरिक क्षेत्रों की बहुत-सी दशाओं तथा परिस्थितियों का सूक्ष्म निरीक्षण कर उनकी अभिव्यक्ति अपनी रचनाओं में की।

उनका कहानी और उपन्यास लेखन उर्दू से प्रारंभ हुआ, परंतु कालांतर में उन्होंने उर्दू के स्थान पर हिंदी में प्रारम्भ कर दिया। सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान और मंगलसूत्र आदि प्रेमचंद के कुछ अमर उपन्यास हैं। प्रेमचन्द के उपन्यास लेखन का उद्देश्य मनोरंजन नहीं, अपितु भारतीय जनता को जागृत करना, और सामाजिक सुधार था।

अपनी पुस्तकों में प्रेमचन्द ने किसानों की आर्थिक दशा, जमीदारों और पुलिस के अत्याचारों, ग्रामीण जीवन की कमजोरियों, समाज की कुरीतियों, शहरी समाज की कमियों, विधवाओं और वेश्याओं की समस्याओं, नारी की आभूषणप्रियता, मध्यवर्ग की झूठी शान और दिखावे की प्रवृत्ति, सम्मिलित हिन्दू-परिवार में नारी की दयनीय स्थिति आदि प्रश्नों और पक्षों पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने कई उपन्यासों में गांव और शहर की कहानी, ग्रामीण और नागरिक जीवन की झांकी साथ-साथ प्रस्तुत की है। उनके उपन्यासों में कथानक सुगठित है चरित्र-चित्रण प्रायः मनोविज्ञान के अनुकूल सजीव और स्वाभाविक है। संवाद पात्रों और परिस्थितियों के अनुसार हैं और भाषा सरल एवं व्यवहारिक है।

व्यापक सहानुभूति-विशेषकर शोषित किसान, मजदूर और नारी का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण, यथार्थवाद अर्थात् उपन्यास में जीवन का यथार्थ चित्रण, मानव-जीवन और मानव-स्वभाव की अच्छी जानकारी होने से सजीव पात्रों और सजीव वातावरण का निर्माण, चरित्र-चित्रण में नाट्कीय कथोपकथनात्मक तथा घटनापरक पद्धतियों का उपयोग, समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि पात्रों की सृष्टि, अपने व्यक्तित्व को पात्रों से पृथक रखकर उन्हें प्रायः अपनी सहज-स्वच्छन्द गति से चलने देना, अनेकानेक सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं का चित्रण, समाज के साथ पारिवारिक जीवन की सुन्दर अभिव्यक्ति, मानव-कल्याण की ओर संकेत करने वाले नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा और सरल व्यावहारिक भाषा का संग्रह आदि वे उपन्यास विशेषताऐं हैं जिन्होंने प्रेमचंद की उपन्यासों को जन जन तक पहुँचाया और तत्कालीन समाज के हिंदी पाठकों को चुम्बकीय तरीके से अपनी तरफ आकर्षित किया।

प्रेमचंद युग में मुंशी प्रेमचंद के अलावा अनेकों अन्य महत्वपूर्ण उपन्यासकार हुए जिन्होंने अपने-अपने तरीके से प्रेमचंद द्वारा स्थापित उपन्यास लेखन की परंपरा को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया। प्रेमचंद युग के कुछ विशिष्ट उपन्यासकार हैं- विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, प्रसाद, निराला, सुदर्शन, चतुरसेन शास्त्री, वृन्दावन लाल वर्मा, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, सियारामशरण गुप्त, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', भगवती प्रसाद वाजपेयी, गोविन्दवल्लभ पंत, राहुल सांकृत्यायन और जैनेन्द्र।

उद्देश्य

1. हिंदी साहित्य की गद्य एवं पद्य विधाओं से परिचित कराना
2. हिंदी गद्य साहित्य के अंतर्गत उपन्यास विधा के महत्व और सामाजिक प्रासंगिकता प्रकट करना
3. हिंदी उपन्यास की साहित्यिक यात्रा को संक्षेप में प्रस्तुत करना
4. हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचंद के योगदान को प्रस्तुत करना

प्राक्कल्पना

1. हिंदी गद्य की प्रमुख दो विधाऐं हैं- गद्य एवं पद्य
2. उपन्यास का संबंध हिंदी गद्य साहित्य से है
3. हिंदी उपन्यासकार उपन्यास के माध्यम से समकालीन सामाजिक दशाओं और प्रवृत्तियों का उल्लेख करते हैं
4. हिंदी उपन्यास की साहित्यिक यात्रा अनेकों पड़ावों को पार करती हुई नवीन परिवर्तनों के साथ अबाध गति से निरंतर आगे की ओर उन्मुख है
5. मुंशी प्रेमचंद का हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान है।

साहित्य पुनरावलोकन

1. नागेश कुमार सिंह (2006) ने अपने शोधप्रबंध 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में प्रेमचंद के साहित्य का योगदान' के अंतर्गत लेखित किया है कि 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में जितना अधिक योगदान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, विभिन्न राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों, क्रांतिकारियों और राष्ट्रवादियों का रहा है, उससे कम योगदान साहित्य का, विशेषकर प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों का नहीं है'।[1]
2. डॉ.सबीहा शाहीन (2013) ने अपने शोधपत्र 'मुंशी प्रेमचंदः दि एम्परर ऑफ़ नोवल्स' के अंतर्गत टिप्पणी करती हैं कि हिंदी और उर्दू में उपन्यासों और लघु कथाओं के लेखक प्रेमचंद ने अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय विषयों

को पश्चिमी साहित्यिक शैलियों के अनुरूप ढाला। प्रेमचंद ने उन समस्त विषयों पर उपन्यास और कहानियां लिखीं जो हमेशा से अस्तित्व में थीं, परंतु जिनको अब तक साहित्य के दायरे से परे माना जाता था। शोषण और अधीनता, लालच और भ्रष्टाचार, गरीबी की सीधी मार और एक अडिग जाति व्यवस्था आदि विषय उनकी उपन्यासों में आसानी से देखे जा सकते हैं। तीन दशकों के साहित्यिक करियर के साथ जिसमें 14 उपन्यास, 300 लघु कथाएँ, कई अनुवाद शामिल थे, मुंशी प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में इतिहास रचकर अपना स्थान हमेशा के लिए बना लिया'।[2]

3. हेंज वर्नर वेस्लर (2015) ने अपने शोधपत्र 'प्रेमचंद1915: मूविंग इनसाइड दि लैंग्वेज कॉन्टीनुम फ्रॉम उर्दू टु हिंदी' के अंतर्गत प्रेमचंद की उर्दू में प्रारंभिक शुरुआत पर लिखा है कि 'प्रेमचंद ने अपने करियर की शुरुआत 20वीं सदी के प्रमुख भारतीय उर्दू लेखक के रूप में की। हिंदी लेखन के प्रति उनका झुकाव धीरे-धीरे हुआ और वे अपनी मृत्यु तक उर्दू में लिखते रहे। उनकी भाषा का चयन व्यावहारिक और आर्थिक आवश्यकताओं से प्रेरित था। हिंदी ने उन्हें एक बड़ा पाठक वर्ग प्रदान किया। उनके कलात्मक विकास में भाषा की पसंद से कहीं अधिक महत्वपूर्ण उनकी साहित्यिक शैली का विकास था, जिसके लिए 1915 के आसपास के महत्वपूर्ण वर्षों में, वह रूसी साहित्य और विशेष रूप से ल्यू टॉल्स्टॉय के मॉडल पर अपनी कथात्मकता विकसित करना चाहते थे। 1908 के आसपास शुरू होने वाला दशक न केवल प्रेमचंद के लिए, बल्कि हिंदी के साथ-साथ उर्दू गद्य साहित्य के लिए भी एक रचनात्मक चरण था'।[3]

4. मालाकार बरनाली (2015) अपने शोधप्रबंध 'ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ दि प्री-इंडिपेंडेंस हिंदी एंड असमीज शार्ट स्टोरीज विद स्पेशल रिफरेन्स टु प्रेमचंद एंड सरत चंद्र गोस्वामी' के अंतर्गत लिखते हैं कि 'हिंदी साहित्य सम्पूर्ण भारत की सभ्यता, संस्कृति, प्रथाओं और परम्पराओं को प्रतिबिंबित करता है। उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद और सरत चंद्र गोस्वामी का विशेष योगदान रहा है। यद्यपि ये दोनों साहित्यकार अलग-अलग क्षेत्रों से संबंध रखते थे और सामाजिक समस्याओं के प्रति उन दोनों का भिन्न भिन्न दृष्टिकोण था, फिर भी उन दोनों के उपन्यासों में बहुत सारी समानताऐं हैं। प्रेमचंद और सरत चंद्र गोस्वामी का युग भारतीय संस्कृति के सुधार का युग था'।[4]

शोधपद्धति

प्रस्तुत शोधपत्र हेतु सर्व प्रथम उद्देश्यानुरूप गुणात्मक शोध प्ररचना का निर्माण किया गया। प्राक्कल्पना का निर्माण करने के उपरांत सम्बंधित साहित्य का अध्ययन और विवेचन किया गया। विषय सम्बन्धी साहित्य का संकलन पुस्तकों और विशेष रूप से इंटरनेट साइटों पर उपलब्ध प्रकाशित शोध अध्ययनों जैसे- शोधपत्र, सम्पादकीय लेख, शोधप्रबंध आदि से किया गया। शोध अध्ययन के निष्कर्ष में लेखिका का हिंदी उपन्यास संबंधी एवं मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास लेखन सम्बन्धी पूर्व अर्जित ज्ञान के अलावा उपलब्ध प्रकाशित साहित्य से चयनित सामग्री अंश भी है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद जिन्हें आमतौर पर 'भारत का टॉल्स्टॉय' कहा जाता है, ने हिंदी साहित्य को वास्तविकता का रूप दिया। उन्होंने एक उपन्यासकार, कहानीकार और एक नाटककार के रूप में साहित्यिक विधा पर विजय प्राप्त की जिसके कारण आधुनिक साहित्य में उनको 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दी गई। उन्होंने पाठकों के समक्ष समाज की वास्तविकता का चित्रण कर हिन्दी साहित्य जगत को एक नया आयाम दिया।

उन्होंने वर्ष 1917 में अपने उपन्यास 'सेवासदन' से हिंदी साहित्य जगत में प्रवेश किया। उन्होंने 17 उपन्यास और 300 से अधिक लघु कथाएँ लिखी हैं, जिनमें उनके समय के दौरान समाज में प्रचलित सामाजिक मुद्दों को दर्शाया गया है। उन्होंने समाज में व्याप्त सामंती व्यवस्था, जमींदारी प्रथा, गरीबी, सांप्रदायिकता, जाति व्यवस्था और सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों के खिलाफ आवाज उठाई।

उन्होंने समाज में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव का भी जिक्र किया, दहेज प्रथा, विधवा विवाह के खिलाफ लड़ाई लड़ी और कहा कि महिलाओं को आगे आना होगा और सामाजिक बुराइयों और उनके साथ होने वाले भेदभाव के खिलाफ अपनी भावनाओं को व्यक्त करना होगा। उन्होंने अपने आस-पास के जीवन पर लिखा और पाठकों को अपने आस-पास की सामाजिक संरचना के बारे में जागरूक किया। उन्होंने अपने काम में आम आदमी की समस्याओं का चित्रण करते हुए उन्हें नायक और नायिका का दर्जा दिया।

इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रेमचंद से पहले और उनके बाद भी आज तक अनेकों उपन्यास लिखे जा चुके हैं, परंतु प्रेमचंद के उपन्यास लेखन का जो उद्देश्य था, वैसा उद्देश्य किसी अन्य उपन्यासकार का नहीं रहा। उनके उपन्यास साहित्यिक मानकों की दृष्टि से सटीक उपन्यास थे जो समकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ पर आधारित थे। चूंकि प्रेमचंद के उपन्यासों में समकालीन परिदृश्य जैसे गरीबी, भुखमरी, सामंतवादी व्यवस्था, महिलाओं की दुर्दशा, विधवाओं की स्थिति आदि का यथार्थ चित्रण है, वे जन-जन के हृदय में अपना स्थान बना चुकी हैं। प्रेमचंद वास्तविक अर्थों में एक यथार्थवादी एवं आदर्श उपन्यासकार थे जिनके उपन्यासों में वे सभी विशेषताऐं एक साथ देखने को मिलती हैं जिनकी अपेक्षा आदर्श उपन्यास लेखन हेतु की जाती है।

संदर्भ सूची

1. *नागेश कुमार सिंह, 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में प्रेमचंद के साहित्य का योगदान', वी बी एस पूर्वांचन विश्वविद्यालय, 2006*
2. *डॉ.सबीहा शाहीन, 'मुंशी प्रेमचंदः दि एम्परर ऑफ़ नोवल्स', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, वॉल्यूम 1, इशू 3, 2013*
3. *हेंज वर्नर वेस्लर, 'प्रेमचंद 1915: मूविंग इनसाइड दि लैंग्वेज कॉन्टीनुम फ्रॉम उर्दू टु हिंदी', एक्टा ओरिएंटलिया, इशू 76, 159-179*
4. *मालाकार बरनाली, 'ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ दि प्री-इंडिपेंडेंस हिंदी एंड असमीज शार्ट स्टोरीज विद स्पेशल रिफरेन्स टु प्रेमचंद एंड सरत चंद्र गोस्वामी', हिंदी विभाग, गुहाटी विश्वविद्यालय, 2015*